1857 की वीरांगनाएं : जिन्होने राष्ट्र को सर्वोपरि माना

10 मई 1857 का भारतीय विद्रोह, जिसे प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, सिपाही विद्रोह और भारतीय विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है । यह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एक सशस्त्र विद्रोह था।यह वही दिन था जब सैकड़ो सालो की गुलामी सहने वाले भारत का स्वाभिमान एक बार फिर जाग उठा था । यह विद्रोह दो वर्षों तक भारत के विभिन्न क्षेत्रों में चला। इस विद्रोह का आरंभ छावनी क्षेत्रों में छोटी झड़पों तथा आगजनी से हुआ था परन्तु जनवरी मास तक इसने एक बड़ा रूप ले लिया। यह युद्ध भारत में महाभारत के बाद लड़ा गया सबसे बड़ा युद्ध था। सम्पूर्ण भारत में चलने वाले इस विद्रोह में न कैवल वीरों का योगदान रहा बल्कि वीरांगनाएं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। ये वो वीरांगनाएं थी जिन्होने अपनी जान जोखिमों में डालकर देश के लिए अपने प्राणो की आहुति दी।

भारत में नारी को हमेशा देवी की संज्ञा दी गई है। जब जब आवश्यता पड़ी तो नारी ने ज्ञान की प्रतिमूर्ति बनकर स्वरो से देश को एक नई दिशा दी और जब अवसर आया तो उसी नारी ने शक्ति स्वरूपा चंडी का भी रूप धारण कर अदम्य शक्ति का लोहा मनवाया इसलिए स्वतंत्रता संग्राम में केवल पुरुषों का नाम लेना गलत होगा। स्वतंत्रता संग्राम मे महिलाओ ने भी अपने अटूट साहस से अंग्रेज़ो को लोहे के चने चबवा दिये इसलिए भारतीय वीरांगनाओ का जिक्र किए बिना सम्पूर्ण स्वाधीनता आंदोलन की दास्तान अधूरी है।

जब भी हम 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की बात करते हैं, तब हमारा ध्यान तुरंत रानी लक्ष्मीबाई और बेग़म हज़रत महल की ओर जाता है. लेकिन क्या, इस संघर्ष में सिर्फ़ इन्हीं दो स्त्रियों का योगदान था? नहीं ऐसी और भी बहुत सारी महिलाए थी जिन्होने स्वतंत्रता संग्राम में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। आज भी जब हम स्वाधीनता का नाम लेते है तो इन महिलाओ को कोई भी याद नहीं करता। जबकि इन महिलाओ के बिना स्वतन्त्रता संग्राम अधूरा था।

इस संघर्ष में भाग लेने वाली महिलाए थी:-

1. दलित समुदायों से आने वाली औरतें थीं (विद्वान जिन्हें दलित वीरांगनाएं कहकर पुकारते हैं),
2. कई भटियारिनें या सराय वालियां थीं, जिनके सरायों में विद्रोही योजनाएं बनाते थे.
3. कई कलावंत और तवायफ़ें भी इसमें मददगार थीं, जो समाचार और सूचनाएं पहुंचाने का काम करती थीं.
4. कई महिलाओ ने तो पैसों से भी इसमें मदद की.

मगर ऐसा क्यों है कि हम शायद ही कभी इन औरतों के बारे में बात करते हैं? क्या इसकी वजह यह है कि ये औरतें समाज के हाशिए से ताल्लुक रखती थीं और इसी कारण इनके बलिदानों को कहीं दर्ज नहीं किया गया? या इसकी वजह यह है कि इनकी साहस की कहानियां कहने वाला कोई नहीं था? या इतिहास में इनकी ग़ैरहाजिरी की वजह यह है कि परंपरागत पितृसत्तात्मक समाजों में औरतों को योद्धाओं के तौर पर नहीं देखा जाता था? 1857 की क्रांति से संबन्धित 6 ऐसी महिलाए जिन्होने उस दौर मे भी राष्ट्र को सर्वोपरि माना।

1. **<u>लज्जों ने रखी थी 1857 की क्रांति की नींव-:</u>** बहुत ही कम लोग इस बात को जानते होंगे कि बैरकपुर मे मंगल पांडे को चर्बी लगे करतूसों के बारे मे सबसे पहले मातादीन भंगी ने बताया था। बैरकपुर छावनी कोलकत्ता से मात्र 16 किलोमीटर की दूरी पर था। फैक्ट्री में कारतूस बनाने वाले मजदूर मुसहर जाति के थे। एक दिन वहां से एक मुसहर

मजदूर छावनी आया। उस मजदूर का नाम माता दीन भंगी था। मातादीन को प्यास लगी, तब उसने मंगल पांडेय नाम के सैनिक से पानी मांगा। मंगल पांडे ने ऊंची जाति का होने के कारण उसे पानी पिलाने से इंकार आकर दिया। कहा जाता है कि इस पर माता दीन भंगी बौखला गया और उसने कहा कि कैसा है तुम्हारा धर्म जो एक प्यासे को पानी पिलाने की इजाजत नहीं देता और गाय जिसे तुम लोग मां मानते हो, सूअर जिससे मुसलमान नफरत करते हैं, लेकिन उसी के चमड़े से बने कारतूस को मुंह से खोलते हो। मंगल पांडेय यह सुनकर चकित रह गए। उन्होंने मातादीन को पानी पिलाया और इस बातचीत के बारे में उन्होंने बैरक के सभी लोगों को बताया। इस सच को जानकार मुसलमान भी बौखला उठे। मातादीन को इसकी जानकारी उसकी पत्नी ने दी थी। लज्जो, एक अंग्रेज़ अफसर के घर पर काम करती थी और वही पर उसे यह सुराग मिला कि अंग्रेज़ गाय और सुअर की चर्बी वाले कारतूस इस्तेमाल करने जा रहे हैं।

2. **<u>बेगम हजरत महल</u>** :- लखनऊ में '1857 की क्रांति' का नेतृत्व बेगम हज़रत महल ने किया था। अपने नाबालिग पुत्र बिरजिस कादर को गद्दी पर बिठाकर उन्होंने अंग्रेज़ी सेना का स्वयं मुक़ाबला किया।

नवाब वाजिद अली शाह की पत्नी बनने तक के सफ़र में बेगम हज़रत महल की जिंदगी में कई मोड़ आए.

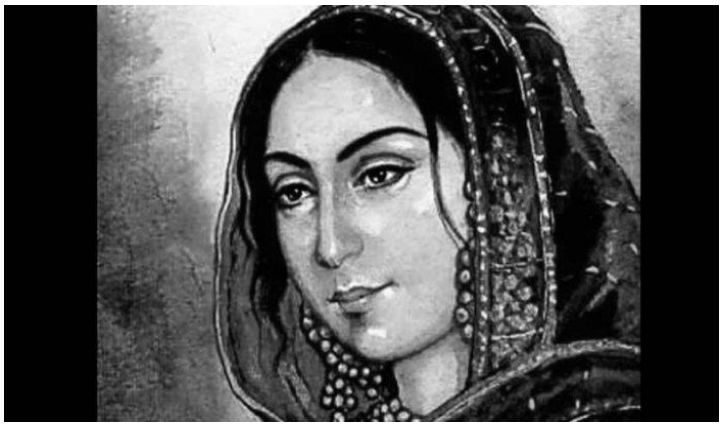

एक ऐसा वक़्त भी आया, जब 1856 में नवाब ने ब्रिटिश हुकूमत के अधीन सिद्धांतों को मानने से इंकार कर दिया. इस कारण अंग्रेजों ने अवध के राज्य पर कब्ज़ा कर लिया और नवाब वाजिद अली शाह को कलकत्ता भेज कर बंदी बना लिया.ऐसी स्थिति में बेगम ने अवध राज्य के कार्यभार को सभांलने का फैसला किया. साथ ही अपने पति के बंदी बनाए जाने पर हज़रत महल ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ चिंगारी लगाना शुरू कर दिया। नजीता यह रहा कि 1857 की क्रांति से पहले ही अवध राज्य में ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ नारजगी का दौर शुरू हो चुका था.

1857 मे स्वतंत्रता संग्राम छिड़ने पर बेगम हज़रत महल ने अपने 12 साल के बेटे बिरजिस कद्र को अवध की गद्दी पर बैठा दिया। उन्होने ऐसा इसलिए किया क्योकि बेगम खुद अंग्रेज़ो से मुक़ाबला करना चाहती थी।

'महिला सैनिक दल था उनकी असली ताकत '

अपने बेटे की ताजपोशी के बाद हज़रत महल ने 1857 की क्रांति में अपनी साहस और बहादुरी का परिचय दिया. उन्होंने अवध राज्य के नागरिकों को अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित किया. बेगम हज़रत महल हिन्दू मुस्लिम में भेदभाव नहीं करती थीं। उन्होंने सभी धर्मों के सैनिकों को समान अधिकार दिया था। इस तरह से बेगम ने अपनी सैनिक शक्ति को काफी मजबूत बना लिया। रानी लक्ष्मीबाइ के जैसे उनकी सेना मे भी काफी महिलाए थी जिन्होने क्रांति के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिये।

- लखनऊ में बेगम हज़रत महल की महिला सैनिक दल का नेतृत्व **रहीमी** के हाथों में था, जिसने फ़ौजी भेष अपनाकर तमाम महिलाओं को तोप और बन्दूक चलाना सिखाया। रहीमी की अगुवाई में इन महिलाओं ने अंग्रेज़ों से जमकर लोहा लिया।
- लखनऊ की तवायफ हैदरीबाई के यहाँ तमाम अंग्रेज़ अफ़सर आते थे और कई बार क्रांतिकारियों के ख़िलाफ़ योजनाओं पर बात किया करते थे। हैदरीबाई ने पेशे से परे अपनी देशभक्ति का परिचय देते हुये इन महत्त्वपूर्ण सूचनाओं को क्रांतिकारियों तक पहुँचाया और बाद में वह भी रहीमी के सैनिक दल में शामिल हो गयी।

ऐसा माना जाता है कि बेगम हज़रत महल में गजब का कुशल नेतृत्व था, जिसके कारण अवध के जमींदार, किसान और सैनिक सभी उनके अधीन हो गए. इसके साथ ही इनको इस स्वतंत्रता संग्राम में नाना साहिब का भी बहुत साथ मिला।

बेगम हज़रत महल अपनी सेनाओं के मनोबल को बढ़ाने के लिए मैदान में भी अपने सिपाहियों का नेतृत्व करतीं और अपनी तलवार से अंग्रेजों का डटकर मुकाबला करती थीं. 1857 में इनकी सेना ने अंग्रेजों के खिलाफ सबसे लम्बी लड़ाई लड़ी थी. हालांकि, जल्द ही अंग्रेजों ने अपने बेहतर युद्ध हथियार की बदौलत लखनऊ पर कब्ज़ा कर लिया, जिसके कारण बेगम हज़रत महल को लखनऊ छोड़ना पड़ा था। अपना सिंहासन छोड़ने के बाद भी हज़रत महल के सीने में क्रांति की आग ठंडी नहीं हुई थी. लखनऊ को छोड़ने के बाद, उन्होंने फैजाबाद के मौलवी अहमदुल्लाह शाह के साथ मिलकर अंग्रेजीं हुकूमत के खिलाफ अपने विद्रोह को जारी रखे. अवध के जंगलों को उन्होंने अपना ठिकाना बनाया और गुरिल्ला युद्ध नीति से अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया।

3. **ऊदा देवी :-** ऊदा देवी एक स्वतन्त्रता सेनानी थीं जिन्होने 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय सिपाहियों की ओर से युद्ध में भाग लिया था। ये अवधके छठे नवाब वाजिद अली शाह के महिला दस्ते की सदस्य थीं। इस विद्रोह के समय हुई लखनऊ की घेराबंदी के समय लगभग 2000 भारतीय

सिपाहियों के शरणस्थल सिकन्दर बाग़ पर ब्रिटिश फौजों द्वारा चढ़ाई की गयी थी और 16 नवंबर 1857 को बाग़ में शरण लिये इन 2000 भारतीय सिपाहियों का ब्रिटिश फौजों द्वारा संहार कर दिया गया था।

ऊदा देवी

सिकंदर बाग, जहां ऊदा देवी ने 32 ब्रिटिश सैनिको को मार गिराया और वीरगति को प्राप्त हुई।

'सार्जेण्ट फ़ॉर्ब्स मिशेल' ने सिकंदर बाग के उद्यान में स्थित पीपल के एक बड़े पेड़ की ऊपरी शाखा पर बैठी एक ऐसी स्त्री का विशेष उल्लेख किया है, जिसने अंग्रेजी सेना के लगभग बत्तीस सिपाही और अफसर मार गिराय। लंदन टाइम्स के संवाददाता 'विलियम हावर्ड रसेल' ने लड़ाई के समाचारों का जो प्रेषण लंदन भेजा उसमें पुरुष वेशभूषा में एक स्त्री द्वारा पीपल के पेड़ से फायरिंग करके तथा अंग्रेजी सेना को भारी क्षति पहुँचाने का उल्लेख प्रमुखता से किया। संभवतः लंदन टाइम्स में छपी खबरों के आधार पर ही कार्ल मार्क्स ने भी अपनी टिप्पणी में इस घटना को समुचित स्थान दिया। ऊदा को इसकी प्रेरणा अपने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पति मक्का पासी से प्राप्त हुई थी। 10 जून 1857 को लखनऊ के चिनहट कस्बे के निकट इस्माईलगंज में हेनरी लॉरेंस के नेतृत्व में ईस्ट इंडिया कम्पनी की फौज के साथ मौलवी अहमद उल्लाह शाह की अगुवाई में संगठित, विद्रोही सेना की ऐतिहासिक लड़ाई में मक्का पासी वीरगति को प्राप्त हुए थे। इसके प्रतिशोध स्वरूप उन्होंने कानपुर से आयी काल्विन कैम्बेल सेना के 32 सिपाहियों को मृत्युलोक पहुँचाया। इस लड़ाई में ऊदा खुद भी वीरगति को प्राप्त हुईं। कहा जाता है इस स्तब्ध कर देने वाली वीरता से अभिभूत होकर **काल्विन कैम्बेल** ने हैट उतारकर शहीद ऊदा देवी को श्रद्धांजलि दी।

4. ***अवन्ती बाई :-*** अवन्ती बाई को 1857 की क्रांति में ब्रिटिशो के खिलाफ साहस भरे अंदाज़ से लड़ने और ब्रिटिशो की नाक में दम कर देने के लिए याद किया जाता है। अवन्ती बाई मध्य भारत के रामगढ की रानी थी। उन्होंने अपनी मातृभूमि पर ही देश की आज़ादी के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया था.
1857 की क्रांति के समय रानी अवंतीबाई ब्रिटिशो के मुख्य दुश्मनो में से एक थी. अवंतीबाई लोधी रामगढ के राजा विक्रमादित्य सिंह की रानी थी. जब विक्रमादित्य का स्वास्थ आचनक खराब हो गया तो वे अपने साम्राज्य को संभाल नहीं प रहे थे तब अवंतीबाई ने राज्य की बागडोर अपने मे हाथो लेकर ब्रिटिश राज के

खिलाफ लड़ने लगी थी.जब 1857 की क्रांति चरम पर थी तभी रानी अवंतीबाई ने अपनी विशाल सेना का निर्माण किया. अंग्रेजो के खिलाफ अपना पहला एनकाउंटर उन्होंने खेरी नामक ग्राम में किया था. महारानी अवंतीबाई लोधी ने 1857 ईस्वी के स्वतंत्रता संग्राम में अग्रेंजो के खिलाफ खुलकर लोहा लिया था और अंत में भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणो की आहुति दे दी थी.

20 मार्च 1858 को इस वीरांगना ने अपने आप को चारो तरफ से घिरता देख स्वयं को तलवार भोंक कर देश के लिए बलिदान दे दिया। भारत के इतिहास में इस वीरांगना अवंतीबाई ने सुनहरे अक्षरों में अपना नाम लिख दीया.

5. **बेगम ज़ीनत महल :-** बेगम ज़ीनत महल मुग़ल सम्राट बहादुर शाह ज़फ़र की पत्नी (बेगम) थी। बेगम ज़ीनत महल ने दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों में स्वातंत्र्य योद्धाओं को संगठित किया और देश प्रेम का परिचय दिया था। सन् 1857 की क्रांति के लिए बहादुरशाह जफर को प्रोत्साहित किया। बेगम ज़ीनत ने उनको ललकारते हुए कहा था , ‘ यह समय गजले सुन कर दिल बहलाने का नहीं है’ बिठूर से नाना साहब का पैगाम लेकर देशभक्त सैनिक आए है, आज हिंदुस्तान की आँखें दिल्ली तथा आप पर लगी है, खानदान-ए-मुगलिया का खून हिन्द को गुलाम होने देगा तो इतिहास उसे कभी क्षमा नहीं करेगा। अपनी बेगम से प्रेरित होकर ही बहादुर शाह ज़फ़र ने अंग्रेज़ो के खिलाफ मोर्चा संभाला। अंग्रेजों के ख़िलाफ़ भारतीय सैनिकों की बगावत को देख बहादुर शाह जफर का भी गुस्सा फूट पड़ा और उन्होंने अंग्रेजों को हिंदुस्तान से खदेड़ने का आह्वान कर डाला।

6. **झलकारीबाई :-** झलकारी का विवाह झांसी की सेना में सिपाही रहे पूरन कोली नामक युवक के साथ हुआ था। पूरे गांव वालों ने झलकारी बाई के विवाह में भरपूर सहयोग दिया। विवाह के बाद वह पूरन के साथ झांसी आ गई। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने महिलाओ की ‘दुर्गा दल ‘ नामक एक टुकड़ी बनाई थी। इस दल की पूरी जीमेदारी झलकारीबाई के हाथो मे थी। झलकारीबाई ने कसम खाई थी की जब तक झांसी स्वतंत्र नहीं होगी तब तक न ही मै श्रृंगार करुगी और न ही सिन्दूर लगाऊंगी। वे लक्ष्मीबाई की हमशक्ल भी थीं, इस कारण शत्रु को धोखा देने के लिए वे रानी के वेश में भी युद्ध करती थीं। अंग्रेज़ो ने जब झांसी का किला घेरा तब झलकारीबाई पूरे जोश के साथ लड़ी और शहीद हो गई। झलकारी बाई की गाथा आज भी बुंदेलखंड की लोकगाथाओं और लोकगीतों में सुनी जा सकती है। झलकारी बाई के सम्मान में सन् 2001 में डाक टिकट भी जारी किया गया। भारत की संपूर्ण आजादी के सपने को पूरा करने के लिए प्राणों का बलिदान करने वाली वीरांगना झलकारी बाई का नाम आज भी इतिहास के पन्नों में अपनी आभा बिखेरता है।